नमस्कार

हिन्दी
साहित्य
का
इतिहास

हिन्दी साहित्य का इतिहास

- आदिकाल
- भक्ति काल
- रीति काल
- आधुनिक काल

हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल
सम्वत् 1375 से 1700 सम्वत्

स्वर्णयुग

- ❖1. सामान्य परिचय एवं प्रमुख प्रवृतियां
- ❖2. संत काव्य
- ❖3. सूफी काव्य
- ❖4. राम काव्य
- ❖5. कृष्ण काव्य

भक्तिकाल

- हिन्दी साहित्य के द्वितीय काल अर्थात् मध्यकाल को दो खण्डों में विभक्त किया गया है- पूर्व मध्यकाल एवं उत्तर मध्यकाल। पूर्व मध्यकाल को भक्तिकाल व उत्तर मध्यकाल को रीतिकाल के नाम से जाना जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने भक्तिकाल को 'पूर्व मध्यकाल' कहा है, जिसकी समय सीमा उन्होंने सम्वत् 1375 विक्रमी से लेकर सम्वत् 1700 विक्रमी तक स्वीकार की है। उनके अनुसार इस कालखण्ड में भक्ति की प्रधानता थी, अतः प्रवृत्ति की दृष्टि से इसका यह नामकरण पूर्ण रूप से उचित है। डॉ. नगेन्द्र ने अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से 1350 ई. से लेकर 1650 ई. तक भक्तिकाल की समय सीमा स्वीकार की है।

भक्तिकाल का विभाजन

- इस समय हिन्दू और इस्लाम दोनों धर्मों का सर्वश्रेष्ठ रूप भक्तिकाव्य में देखने को मिलता है।
- दोनों धर्मों की अच्छी शिक्षाओं को ब्रज और अवधी जैसी साधारण भाषाओं में आम लोगों तक पहुंचाया।
- धार्मिक और जातिगत भेद्भावों को जड़ से मिटाने का प्रयत्न इस समय के साधु-संतों, सूफियों और भक्त कवियों ने किया। भक्ति काल में लिखी गई रचनाओं की विशेषताओं के आधार पर भक्ति काल को दो धाराओं में विभाजित किया गया है। सगुण भक्ति धारा और निर्गुण धारा इनकी दो-दो शाखाएं हैं।

भक्तिकाल का विभाजन

भक्तिकाल

- **निर्गुण धारा**
  - ज्ञानमार्गी शाखा — कबीरदास, रैदास, धर्मदास
  - प्रेममार्गी शाखा — जायसी, कुतुबन, मंझन
- **सगुण धारा**
  - रामभक्ति शाखा — तुलसीदास, अग्रदास, नाभादास
  - कृष्णभक्ति शाखा — सूरदास, कृष्णदास, मीरा

उदय के कारण

- मुसलमान शासक हिन्दू प्रजा को इस्लाम या मौत में से एक को स्वीकार करने के लिए कहते थे।
- हिंदुओं पर जजिया कर लगाया गया। जिसे देकर हिंदू जीवित रह सकते थे।
- मुसलमान शासक हिंदू धर्म और संस्कृति को नष्ट करने के लिए उनके धार्मिक स्थानों, मंदिरों, मूर्तियों को नष्ट कर रहे थे और धर्म गुरुओं को जिंदा जला रहे थे।
- ऐसी निराशा की परिस्थितियों में जनता का मन ईश्वर की शरण में जाने के लिए प्रेरित हुआ।
- मुसलमान शासकों का जीवन माँस, मदिरा और नारी पर आश्रित था। अधिकतर शासक ऐश्वर्य, वैभव और विलास के प्रेमी थे।

आलवार संत कवि

- ❖आलवार भक्त भगवान की लीलाओं को गाते थे। जिसमें भक्ति और प्रेम की भावना प्रधान थी।
- ❖भक्ति के प्रचार का आरम्भ दक्षिण भारत में आलवार भक्तों द्‌वारा बहुत पहले ही शुरू हो गया था।
- ❖दक्षिण के आलवार भक्तों ने विष्णु के विभिन्न अवतारों को महत्व देते हुए उनकी महिमा का गुणगान किया।
- ❖रामानुजाचार्य उत्तर भारत में भक्ति का प्रचार करने आए थे।

- भक्तिकाल
  - निर्गुण भक्ति धारा
    - प्रेमामार्गी शाखा
    - ज्ञानामार्गी शाखा
  - सगुण भक्ति धारा
    - रामभक्ति शाखा
    - कृष्णभक्ति शाखा

भक्तिकाल के मुख्य कवि

निर्गुण भक्ति काव्य

ज्ञानाश्रयी शाखा

(संत काव्य)

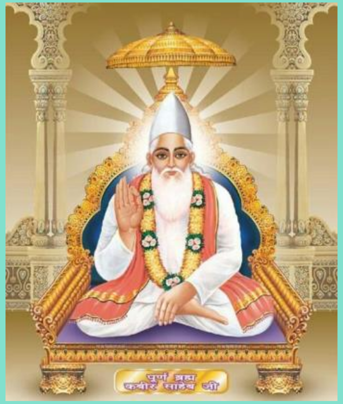

कबीर

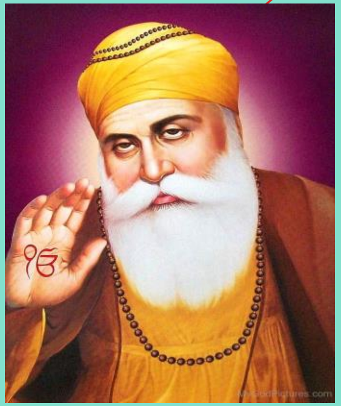

नानक

दादू

प्रेमाश्रयी शाखा

(सूफी काव्य)

जायसी,

कुतुवन

निर्गुण भक्ति काव्य

- **सन्त काव्यधारा :** हिन्दी साहित्य में निर्गुण उपासक ज्ञानाश्रयी शाखा के कवियों को सन्त कहा जाता है। सामान्यतः सदाचार के गुणों व लक्षणों से युक्त व्यक्ति को सन्त कहा जाता है। इन्होंने प्रेम के स्थान पर ज्ञान को महत्त्व दिया है, जिसकी प्राप्ति सच्चे गुरु के मार्गदर्शन से होती है। हिन्दी में अनेक सन्त कवि हुए हैं, जिनके द्वारा रचित काव्य सन्त काव्य कहलाता है। हिन्दी साहित्य से सम्बन्धित प्रमुख सन्त कवियों के नाम इस प्रकार हैं- सन्त कबीर जी, रैदास (रविदास) जी, गुरु नानक देव ज, नामदेव जी, दादूदयाल जी, हरिदास निरंजनी जी, मलूकदास जी, सुन्दरदास जी, सन्त रज्जब, सन्त पीपा जी, सन्त धन्ना जी आदि।

सूफी काव्यधारा को प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा, प्रेममार्गी शाखा जैसे प्रचलित नामों से भी जाना जाता है। इस काव्यधारा में प्रेमतत्त्व की प्रधानता दिखाई देती है। इस काव्यधारा के अधिकतर कवि मुस्लिम धर्म से सम्बन्धित थे, जिन्होंने भारतीय नायक-नायिकाओं की प्रेम कथाओं को आधार बनाकर अपने अपने सूफी मत से सम्बन्धित ग्रन्थ लिखे हैं। इनके ग्रन्थों पर फारसी भाषा की मसनवी शैली का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इन प्रेम आधारित ग्रन्थों का नाम अधिकांशतः नायिकाओं के नाम पर रखा गया है जैसे पद्मावत, हंसावली, मृगावती, चंदायन, मधुमालती, चित्रावली, इंद्रावती इत्यादि। सूफी कवियों में जायसी, असाईत, कुतुबन, मुल्ला दाऊद, मंझन, उस्मान, नूर मुहम्मद, कासिमशाह, शेखनवी, पुहकर, जान कवि इत्यादि प्रमुख हैं।

सगुन भक्ति काव्य

रामभक्ति शाखा

(रामाश्रयी शाखा)

कृष्णभक्ति शाखा

(कृष्णाश्रयी शाखा)

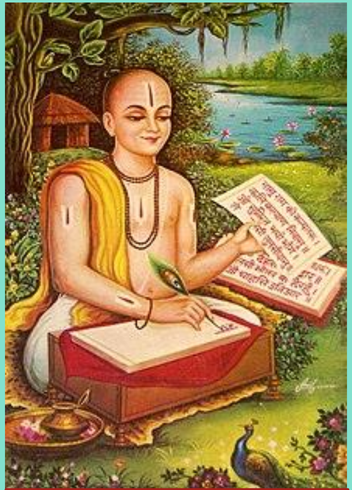

तुलसीदास

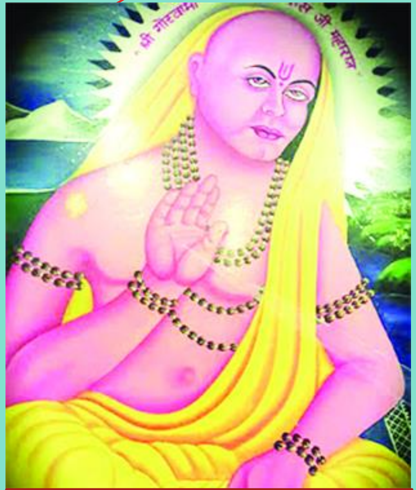

नाभादास

सूरदास

मीराबाई

नंददास

सगुण भक्ति काव्य

❖ **कृष्ण काव्यधारा** : हिन्दी साहित्य की सगुण काव्यधारा के अंतर्गत विष्णु के राम व कृष्ण अवतारों की पूजा-अर्चना की जाती है। कृष्ण काव्य के अंतर्गत कृष्ण जी लीलाओं का गुणगान किया गया है। हिन्दी के विभिन्न विद्वानों ने कृष्ण काव्य के आधार ग्रन्थ भागवत पुराण और महाभारत स्वीकार किए हैं। हिन्दी में कृष्ण काव्य के प्रवर्तन का श्रेय विद्यापति को दिया जाता है। कृष्ण भक्ति के अनेक सम्प्रदाय मध्ययुग में विकसित हुए हैं, जिनसे कृष्ण भक्ति काव्य अत्यन्त प्रभावित हुआ है। इन सम्प्रदायों में वल्लभ सम्प्रदाय, निम्बार्क सम्प्रदाय, राधावल्लभ सम्प्रदाय, हरिदासी सम्प्रदाय, गौड़ीय सम्प्रदाय इत्यादि प्रमुख हैं। कृष्ण काव्य की रचना प्रायः उन भक्त कवियों ने की है, जो किसी न किसी सम्प्रदाय से जुड़े हुए थे। कृष्ण भक्त कवियों में सूरदास, कुंभनदास, परमानन्द दास, कृष्णदास, नंददास, गोविंदस्वामी, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास, रसखान इत्यादि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त कृष्ण को आराध्य मानकर पूजा करने वालों में मीराबाई का भी विशेष स्थान है।

राम काव्यधारा : इस काव्यधारा के अंतर्गत भगवान विष्णु के अवतार राम के चरित्र को केंद्र में रखकर काव्य का सृजन हुआ है, जिनमें उनके चरित्र के विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत किया गया है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित 'रामायण' ही रामकथा मूल स्रोत है। भारत की विभिन्न भारतीय भाषाओं में रामकथा का सृजन हुआ है, जिनमें राम के चरित्र के उज्ज्वल पक्ष को चित्रित किया गया है। इसके अतिरिक्त बौद्ध जातक कथाओं व जैन साहित्य में भी रामकथा पर आधारित अनेक ग्रन्थ मिलते हैं। राम को अपना आराध्य मानकर काव्य रचना करने वाले कवि रामभक्त कवि कहलाते हैं। राम को भगवान विष्णु का अवतार व अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र में जाना जाता है, जिनके जीवन की सम्पूर्ण गाथा की झांकी रामभक्त कवियों ने अपने काव्य ग्रन्थों में की है। इस काव्यधारा के प्रमुख कवियों में गोस्वामी तुलसीदास, नाभादास, अग्रदास, केशवदास, ईश्वरदास, हृदयराम, सेनापति, प्राणचंद चौहान, नरहरि बारहट, लालदास इत्यादि शामिल हैं।

धन्यवाद